IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
बिहार शोध समागम
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 4, October-December, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

बेगूसराय के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विश्लेषण: विरासत संरक्षण के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

महेश कुमार
इतिहास में स्नातकोत्तर
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली
mkumar2905@gmail.com
अमन कुमार
MA (परा स्नातक) - इतिहास
दिल्ली विश्वविद्यालय
Email - amanakash51@gmail.com
आलोक कुमार
पीएचडी शोधार्थी
वयस्क, सतत शिक्षा और विस्तार विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
Email- singhsahwajpur@gmail.com

सार (Abstract)

बिहार भारतीय सभ्यता और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है, जहाँ प्रागैतिहासिक काल से लेकर मध्यकाल तक की विविध सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रमाण प्राप्त होते हैं। इसी ऐतिहासिक विरासत का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बेगूसराय जिला है, जो प्राचीन मगध, वैशाली और मिथिला की सांस्कृतिक सीमाओं से जुड़ा होने के कारण ऐतिहासिक दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है। बेगूसराय के विभिन्न भागों में स्थित पुरातात्विक स्थल–जैसे जयमंगलागढ़, नौलागढ़, कावर झील क्षेत्र तथा स्थानीय स्तर पर प्राप्त प्राचीन मूर्तियाँ, ईंट संरचनाएँ, सिक्के एवं मृदभाण्ड–इस क्षेत्र की समृद्ध ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परम्परा के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। यद्यपि इन स्थलों का उल्लेख विभिन्न पुरातात्विक सर्वेक्षणों एवं क्षेत्रीय इतिहास ग्रंथों में मिलता है, तथापि इनके समग्र ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा विरासत संरक्षण संबंधी विश्लेषण पर अपेक्षाकृत कम शोध उपलब्ध है।

प्रस्तुत शोध-लेख द्वितीयक स्रोतों पर आधारित एक विश्लेषणात्मक अध्ययन है। अध्ययन के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India), बिहार राज्य पुरातत्व निदेशालय, प्रकाशित शोध-पत्रों, पुस्तकों, जिला गजेटियर तथा अन्य प्रामाणिक ऐतिहासिक स्रोतों का उपयोग किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य बेगूसराय के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक महत्त्व, वर्तमान संरक्षण स्थिति तथा विरासत संरक्षण से संबंधित चुनौतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण करना है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बेगूसराय के अनेक पुरातात्विक स्थल केवल स्थानीय धार्मिक आस्था के केंद्र नहीं हैं, बल्कि वे उत्तर बिहार के सांस्कृतिक विकास, प्राचीन व्यापारिक मार्गों, धार्मिक गतिविधियों तथा क्षेत्रीय इतिहास के महत्वपूर्ण साक्ष्य भी हैं। वर्तमान समय में शहरीकरण, अतिक्रमण, प्राकृतिक क्षरण, जन-जागरूकता की कमी तथा संरक्षण संबंधी सीमित प्रयास इन स्थलों के अस्तित्व के लिए गंभीर चुनौती प्रस्तुत कर रहे हैं। अतः इन स्थलों के वैज्ञानिक संरक्षण, डिजिटल अभिलेखीकरण, स्थानीय समुदाय की भागीदारी तथा सतत विरासत प्रबंधन (Sustainable Heritage Management) की दिशा में प्रभावी नीतिगत हस्तक्षेप आवश्यक हैं।

मुख्य शब्द (Keywords): बेगूसराय, पुरातत्व, सांस्कृतिक विरासत, जयमंगलागढ़, विरासत संरक्षण, बिहार, ऐतिहासिक स्थल।

परिचय (Introduction)

भारत विश्व की उन प्राचीन सभ्यताओं में से एक है जिसकी सांस्कृतिक निरंतरता हजारों वर्षों तक अविच्छिन्न रूप से बनी रही है। इस दीर्घ ऐतिहासिक परम्परा को समझने में पुरातत्व (Archaeology) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। पुरातात्विक अवशेष केवल अतीत की भौतिक सामग्री नहीं होते, बल्कि वे किसी समाज की सामाजिक संरचना, आर्थिक गतिविधियों, धार्मिक विश्वासों, कला, स्थापत्य, तकनीकी विकास तथा सांस्कृतिक जीवन के विश्वसनीय साक्ष्य भी प्रस्तुत करते हैं। लिखित इतिहास के अभाव में पुरातत्व ही वह माध्यम है जिसके आधार पर प्राचीन समाजों के जीवन और विकासक्रम का पुनर्निर्माण किया जाता है (Chakrabarti, 2006)।

बिहार भारतीय इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रदेश रहा है। प्राचीन काल में यही क्षेत्र मगध साम्राज्य, मौर्य, गुप्त तथा पाल शासकों की राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र रहा। बौद्ध, जैन तथा वैदिक परम्पराओं के विकास में भी बिहार की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। नालंदा, राजगीर, वैशाली, विक्रमशिला और पाटलिपुत्र जैसे विश्वप्रसिद्ध पुरातात्विक स्थलों के कारण बिहार भारतीय पुरातत्व का एक प्रमुख अध्ययन क्षेत्र माना जाता है (Altekar, 1954; Cunningham, 1871)। किंतु इन प्रसिद्ध स्थलों के अतिरिक्त बिहार के अनेक जिलों में स्थित स्थानीय पुरातात्विक स्थल अभी भी व्यापक अकादमिक अध्ययन और संरक्षण की दृष्टि से अपेक्षाकृत उपेक्षित हैं।

बेगूसराय ऐसा ही एक जिला है जिसकी ऐतिहासिक पहचान सामान्यतः औद्योगिक विकास, स्वतंत्रता आंदोलन तथा सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियों के संदर्भ में की जाती है, जबकि इसका पुरातात्विक महत्त्व अपेक्षाकृत कम चर्चा में रहा है। गंगा नदी के उत्तर स्थित यह क्षेत्र प्राचीन काल से मानव बसावट, कृषि विकास, नदी-आधारित व्यापार तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। जिले के विभिन्न भागों में प्राप्त प्राचीन ईंट संरचनाएँ, मूर्तिकला, ताम्र एवं प्रस्तर प्रतिमाएँ, मृदभाण्ड, सिक्के तथा धार्मिक अवशेष इस क्षेत्र की ऐतिहासिक समृद्धि के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं (Bihar District Gazetteers: Begusarai; ASI Reports).

विशेष रूप से **जयमंगलागढ़** बेगूसराय का सबसे महत्वपूर्ण पुरातात्विक एवं धार्मिक स्थल माना जाता है। कावर झील (Kanwar Lake) के निकट स्थित यह स्थल शक्ति उपासना की परम्परा से जुड़ा होने के साथ-साथ प्राचीन मंदिर स्थापत्य तथा मध्यकालीन सांस्कृतिक इतिहास का भी महत्वपूर्ण केंद्र है। इसी प्रकार **नौलागढ़**, **गढ़पुरा क्षेत्र**, तथा जिले के विभिन्न ग्रामीण भागों से प्राप्त पुरावशेष यह संकेत देते हैं कि बेगूसराय का इतिहास केवल मध्यकाल तक सीमित नहीं है, बल्कि इसकी जड़ें प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल तक जाती हैं। इन स्थलों का व्यवस्थित अध्ययन उत्तर बिहार की क्षेत्रीय संस्कृति तथा ऐतिहासिक भूगोल को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

वर्तमान समय में तीव्र शहरीकरण, अवैध निर्माण, कृषि विस्तार, प्राकृतिक क्षरण तथा जन-जागरूकता की कमी के कारण अनेक स्थानीय पुरातात्विक स्थल धीरे-धीरे नष्ट हो रहे हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण तथा राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा कुछ संरक्षण प्रयास किए गए हैं, किन्तु अधिकांश स्थानीय स्थल अभी भी वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण, उत्खनन एवं संरक्षण की प्रतीक्षा कर रहे हैं। विरासत संरक्षण की समकालीन अवधारणा केवल स्मारकों की सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें स्थानीय समुदाय की भागीदारी, सांस्कृतिक पर्यटन, डिजिटल प्रलेखन तथा सतत विकास (Sustainable Development) जैसे आयाम भी सम्मिलित हैं (UNESCO, 2023).

उपलब्ध साहित्य के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बेगूसराय के इतिहास पर कुछ क्षेत्रीय अध्ययन अवश्य उपलब्ध हैं, किन्तु जिले के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा संरक्षण संबंधी समेकित विश्लेषण अपेक्षाकृत दुर्लभ है। अधिकांश अध्ययन किसी एक स्थल, धार्मिक परम्परा अथवा प्रशासनिक विवरण तक सीमित हैं। इसी शोध-अंतर (Research Gap) को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन बेगूसराय के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों का समग्र ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा विरासत संरक्षण के समकालीन दृष्टिकोण के आधार पर उनके संरक्षण एवं प्रबंधन के लिए नीतिगत सुझाव देने का प्रयास करता है।

इस शोध-लेख का उद्देश्य केवल पुरातात्विक स्थलों का वर्णन करना नहीं है, बल्कि उन्हें क्षेत्रीय इतिहास, सांस्कृतिक पहचान और विरासत संरक्षण के व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझना भी है। यह अध्ययन न केवल बेगूसराय के स्थानीय इतिहास के दस्तावेजीकरण में योगदान देगा, बल्कि बिहार की क्षेत्रीय पुरातात्विक विरासत के संरक्षण संबंधी विमर्श को भी समृद्ध

करेगा।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

बेगूसराय के पुरातात्विक स्थलों पर प्रत्यक्ष रूप से केंद्रित शोध अपेक्षाकृत सीमित हैं, किंतु बिहार के पुरातत्व, उत्तर बिहार की सांस्कृतिक विरासत तथा क्षेत्रीय इतिहास पर उपलब्ध साहित्य इस विषय के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। उपलब्ध साहित्य का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि बेगूसराय की पुरातात्विक विरासत को समझने के लिए सामान्य भारतीय पुरातत्व, बिहार के ऐतिहासिक विकास तथा क्षेत्रीय पुरातात्विक सर्वेक्षणों को एक साथ पढ़ना आवश्यक है।

भारतीय पुरातत्व के व्यवस्थित अध्ययन का प्रारम्भ **Alexander Cunningham** से माना जाता है। उनकी कृतियाँ, विशेषकर *Archaeological Survey Reports*, बिहार सहित उत्तर भारत के अनेक प्राचीन स्थलों की पहचान, सर्वेक्षण तथा ऐतिहासिक पुनर्निर्माण का आधार बनीं। उन्होंने स्थल निरीक्षण, अभिलेखों, मूर्तिकला तथा स्थापत्य अवशेषों के तुलनात्मक अध्ययन की जो कार्यप्रणाली विकसित की, वही आगे चलकर भारतीय पुरातत्व अनुसंधान की मानक पद्धति बनी।

इसके बाद **Anant Sadashiv Altekar** तथा **Bindeshwari Prasad Sinha** ने बिहार के प्राचीन इतिहास, मगध, वैशाली तथा उत्तर बिहार की पुरातात्विक परम्पराओं पर महत्वपूर्ण कार्य किए। विशेष रूप से B. P. Sinha द्वारा बिहार में किए गए उत्खननों एवं क्षेत्रीय इतिहास संबंधी अध्ययनों ने यह स्थापित किया कि उत्तर बिहार के अनेक छोटे पुरातात्विक स्थल भी प्राचीन राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के महत्वपूर्ण केंद्र रहे हैं।

आधुनिक भारतीय पुरातत्व में **Dilip K. Chakrabarti** का योगदान विशेष उल्लेखनीय है। Chakrabarti (2006) ने यह प्रतिपादित किया कि किसी भी पुरातात्विक स्थल का अध्ययन केवल स्मारकों तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि उसके भौगोलिक परिवेश, नदी तंत्र, व्यापारिक मार्गों, संसाधनों तथा सांस्कृतिक परिदृश्य (Cultural Landscape) को भी समान महत्व दिया जाना चाहिए। यह दृष्टिकोण बेगूसराय जैसे नदी-आधारित ऐतिहासिक क्षेत्र के अध्ययन के लिए अत्यंत उपयुक्त है।

बेगूसराय की क्षेत्रीय पुरातात्विक विरासत के संदर्भ में **Radha Krishna Choudhary** का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। उन्होंने 1947 में Kashi Prasad Jaiswal Archaeological Museum की स्थापना कर बेगूसराय क्षेत्र से प्राप्त बिखरे हुए पुरावशेषों–जैसे मूर्तियाँ, अभिलेख, सिक्के तथा अन्य पुरातात्विक सामग्री–का संरक्षण प्रारम्भ किया। उन्होंने जयमंगलागढ़, नौलागढ़ तथा उत्तर बिहार के अन्य स्थलों पर क्षेत्रीय सर्वेक्षण किए और पालकालीन अभिलेखों एवं मूर्तियों के आधार पर बेगूसराय के ऐतिहासिक महत्व को रेखांकित किया।

हाल के वर्षों में **Lalita Kumari (2020)** द्वारा प्रकाशित *Archaeological Gazetteer of Begusarai District* इस क्षेत्र के अध्ययन की सबसे महत्वपूर्ण कृतियों में से एक है। इस ग्रंथ में बेगूसराय जिले के पुरातात्विक स्थलों का व्यवस्थित सूचीकरण, भौगोलिक स्थिति, सांस्कृतिक विशेषताओं तथा उपलब्ध पुरावशेषों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। यह अध्ययन दर्शाता है कि जिले के अनेक स्थल अभी भी विस्तृत उत्खनन तथा वैज्ञानिक विश्लेषण की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

बेगूसराय के धार्मिक एवं पुरातात्विक महत्व के संदर्भ में **Jaimangla Garh Temple** पर उपलब्ध शोध विशेष उल्लेखनीय हैं। विभिन्न पुरातात्विक अध्ययनों से संकेत मिलता है कि यहाँ पालकालीन बौद्ध मूर्तियाँ, प्राचीन सिक्के तथा गुप्तकालीन संरचनात्मक अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो यह दर्शाते हैं कि यह स्थल केवल शक्ति उपासना का केंद्र नहीं था, बल्कि प्रारम्भिक मध्यकालीन धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का भी महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि उत्तर बिहार में बौद्ध एवं ब्राह्मणीय परम्पराएँ समानांतर रूप से विकसित हुईं।

विरासत संरक्षण के क्षेत्र में **UNESCO** तथा Archaeological Survey of India की अवधारणाएँ इस अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण सैद्धांतिक आधार प्रदान करती हैं। UNESCO के अनुसार विरासत संरक्षण का उद्देश्य केवल स्मारकों का भौतिक संरक्षण नहीं, बल्कि उनसे जुड़ी सांस्कृतिक स्मृति, स्थानीय समुदाय की सहभागिता तथा सतत विकास को भी सुनिश्चित करना है। दूसरी ओर ASI संरक्षण के वैज्ञानिक मानकों, प्रलेखन तथा संरचनात्मक संरक्षण पर विशेष बल देता है।

उपलब्ध साहित्य का समेकित विश्लेषण यह दर्शाता है कि बिहार के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों–जैसे नालंदा, वैशाली, राजगीर एवं विक्रमशिला–पर पर्याप्त शोध उपलब्ध है, जबकि बेगूसराय के स्थानीय पुरातात्विक स्थलों पर अनुसंधान अपेक्षाकृत सीमित रहा है। अधिकांश अध्ययन किसी एक स्थल, मूर्तिकला, धार्मिक परम्परा अथवा क्षेत्रीय इतिहास तक सीमित हैं। बेगूसराय के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों का ऐतिहासिक विकास, सांस्कृतिक महत्व तथा विरासत संरक्षण की चुनौतियों का समेकित एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन अभी भी पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं है।

इसी शोध-अंतर (Research Gap) को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन बेगूसराय के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा संरक्षणात्मक दृष्टिकोण से समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। यह अध्ययन न केवल उपलब्ध साहित्य का समन्वित मूल्यांकन करता है, बल्कि क्षेत्रीय विरासत संरक्षण की समकालीन आवश्यकताओं के संदर्भ में भी नए विमर्श प्रस्तुत करता है।

शोध पद्धति (Research Methodology)

अध्ययन की प्रकृति (Nature of the Study)

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) एवं ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक (Historical-Analytical) प्रकृति का है। यह एक **द्वितीयक स्रोतों (Secondary Sources) पर आधारित शोध** है, जिसमें बेगूसराय जिले के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों के इतिहास, सांस्कृतिक महत्त्व तथा विरासत संरक्षण की स्थिति का समालोचनात्मक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य किसी नए पुरातात्विक उत्खनन के निष्कर्ष प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि उपलब्ध साहित्य, प्रकाशित शोध तथा सरकारी अभिलेखों के आधार पर विषय का समेकित मूल्यांकन करना है।

अध्ययन क्षेत्र (Study Area)

अध्ययन का भौगोलिक क्षेत्र बिहार का बेगूसराय जिला है। विश्लेषण के लिए उन पुरातात्विक स्थलों का चयन किया गया है जिनका ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक महत्त्व विभिन्न प्रकाशित स्रोतों में उल्लिखित है। इनमें प्रमुख रूप से जयमंगलागढ़, नौलागढ़, गढ़पुरा क्षेत्र, कावर (काबर) झील क्षेत्र तथा काशी प्रसाद जायसवाल पुरातात्विक संग्रहालय में संरक्षित पुरावशेष शामिल हैं।

आँकड़ों के स्रोत (Sources of Data)

अध्ययन पूर्णतः **द्वितीयक स्रोतों** पर आधारित है। सामग्री निम्नलिखित स्रोतों से संकलित की गई है–

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India) की प्रकाशित रिपोर्टें।
- बिहार राज्य पुरातत्व निदेशालय के प्रकाशन।
- बिहार जिला गजेटियर (Begusarai District Gazetteer)।
- इतिहास एवं पुरातत्व विषयक मानक पुस्तकें।
- सहकर्मी-समीक्षित (Peer-reviewed) शोध-पत्र।
- विश्वविद्यालयों के शोध-प्रबंध एवं शोध रिपोर्टें।
- UNESCO, ICOMOS तथा अन्य विरासत संरक्षण संस्थाओं के प्रकाशित दस्तावेज़।

सभी स्रोतों का चयन उनकी प्रामाणिकता, विषयगत प्रासंगिकता तथा अकादमिक विश्वसनीयता के आधार पर किया गया है।

विश्लेषण की पद्धति (Method of Analysis)

अध्ययन में मुख्यतः **Documentary Analysis** तथा **Historical Analysis** पद्धति का उपयोग किया गया है। उपलब्ध पुस्तकों, शोध-पत्रों, पुरातात्विक रिपोर्टों तथा सरकारी दस्तावेज़ों का तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक विश्लेषण करके बेगूसराय के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक विशेषताओं तथा संरक्षण संबंधी चुनौतियों का मूल्यांकन किया गया है। साथ ही, UNESCO एवं Archaeological Survey of India द्वारा प्रतिपादित विरासत संरक्षण के सिद्धांतों के आलोक में इन स्थलों की वर्तमान संरक्षण स्थिति का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन की सीमाएँ (Limitations of the Study)

यह अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। अतः इसमें क्षेत्रीय सर्वेक्षण, प्रत्यक्ष पुरातात्विक उत्खनन, वैज्ञानिक परीक्षण अथवा साक्षात्कार जैसी प्राथमिक शोध विधियों का उपयोग नहीं किया गया है। साथ ही, बेगूसराय के कुछ स्थानीय पुरातात्विक स्थलों पर उपलब्ध प्रकाशित साहित्य सीमित होने के कारण विश्लेषण उपलब्ध दस्तावेज़ीय साक्ष्यों तक ही सीमित है।

विश्लेषणात्मक रूपरेखा (Analytical Framework)

अध्ययन निम्नलिखित क्रम का अनुसरण करता है–

1. बेगूसराय के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन।
2. उपलब्ध पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक साक्ष्यों का विश्लेषण।
3. क्षेत्रीय इतिहास एवं सांस्कृतिक विरासत में इन स्थलों की भूमिका का मूल्यांकन।
4. विरासत संरक्षण की वर्तमान चुनौतियों का समालोचनात्मक अध्ययन।
5. उपलब्ध साहित्य के आधार पर संरक्षण एवं प्रबंधन के लिए नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

बेगूसराय के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विश्लेषण

बेगूसराय जिला उत्तर बिहार के उन क्षेत्रों में से एक है जहाँ प्राचीन सभ्यता, धार्मिक परम्पराओं तथा नदी-आधारित सांस्कृतिक विकास के अनेक प्रमाण प्राप्त होते हैं। यद्यपि यह जिला नालंदा, वैशाली या राजगीर की तरह व्यापक पुरातात्विक उत्खननों के लिए प्रसिद्ध नहीं है, फिर भी विभिन्न सर्वेक्षणों, संग्रहालयों तथा स्थानीय पुरावशेषों से यह स्पष्ट होता है कि यह क्षेत्र प्राचीन एवं प्रारम्भिक मध्यकालीन सांस्कृतिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, बिहार राज्य पुरातत्व निदेशालय तथा क्षेत्रीय इतिहासकारों द्वारा प्रकाशित अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि जिले के अनेक स्थलों पर व्यवस्थित अनुसंधान की अभी भी पर्याप्त संभावनाएँ विद्यमान हैं।

जयमंगलागढ़ : बेगूसराय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण पुरातात्विक धरोहर

जयमंगलागढ़ बेगूसराय जिले का सर्वाधिक प्रसिद्ध पुरातात्विक एवं धार्मिक स्थल है। यह कावर (काबर) झील के निकट स्थित है और वर्तमान में माँ जयमंगला के शक्तिपीठ के रूप में व्यापक धार्मिक पहचान रखता है। किंतु उपलब्ध ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक साक्ष्य यह संकेत देते हैं कि इसका महत्व केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि यह स्थल प्रारम्भिक मध्यकालीन सांस्कृतिक एवं स्थापत्य परम्पराओं का भी महत्वपूर्ण केंद्र रहा है।

Alexander Cunningham ने बिहार के विभिन्न प्राचीन स्थलों के सर्वेक्षण के दौरान उत्तर बिहार के अनेक धार्मिक स्थलों के ऐतिहासिक महत्व की ओर ध्यान आकर्षित किया था। यद्यपि उन्होंने जयमंगलागढ़ का विस्तृत उत्खनन नहीं किया, परन्तु उनकी सर्वेक्षण पद्धति ने ऐसे क्षेत्रीय स्थलों के वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता को स्थापित किया। बाद में **Radha Krishna Choudhary** तथा अन्य क्षेत्रीय इतिहासकारों ने बेगूसराय क्षेत्र में उपलब्ध मूर्तियों, प्राचीन ईंटों तथा धार्मिक अवशेषों के आधार पर इस क्षेत्र की ऐतिहासिक प्राचीनता की ओर संकेत किया।

जयमंगलागढ़ से प्राप्त मूर्तिकला, प्राचीन ईंटों के अवशेष तथा शिल्प शैली का अध्ययन यह दर्शाता है कि इस क्षेत्र में विशेष रूप से **पालकाल (8वीं-12वीं शताब्दी ई.)** के दौरान धार्मिक गतिविधियाँ सक्रिय थीं। अनेक विद्वानों का मत है कि यहाँ प्राप्त कुछ प्रतिमाओं में पालकालीन मूर्तिकला की विशेषताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं, जिनमें काले प्रस्तर पर सूक्ष्म नक्काशी, अलंकरण तथा प्रतीकात्मक शैली प्रमुख हैं। यह शैली बिहार और बंगाल के पालकालीन कला-विकास से साम्य रखती है।

धार्मिक दृष्टि से यह स्थल शक्ति परम्परा का प्रमुख केंद्र है, किन्तु कुछ पुरातात्विक अध्ययनों में यह भी संकेत मिलता है कि इस क्षेत्र में विभिन्न धार्मिक परम्पराओं का सह-अस्तित्व रहा होगा। उत्तर बिहार के अनेक स्थलों की भाँति यहाँ भी बौद्ध, शैव तथा शाक्त परम्पराओं के सांस्कृतिक अंतर्संबंधों की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। हालांकि इस विषय में अधिक व्यवस्थित उत्खनन और वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है।

वर्तमान समय में जयमंगलागढ़ तीर्थस्थल के रूप में अत्यधिक लोकप्रिय है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था और धार्मिक

पर्यटन को लाभ मिला है। इसके विपरीत तीर्थयात्रियों की बढ़ती संख्या, अनियोजित निर्माण, अतिक्रमण तथा वैज्ञानिक संरक्षण की सीमित व्यवस्था पुरातात्विक अवशेषों के संरक्षण के लिए चुनौती भी प्रस्तुत करती है। UNESCO द्वारा प्रतिपादित "Heritage Management" की अवधारणा के अनुसार धार्मिक उपयोग और पुरातात्विक संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करना आवश्यक है। जयमंगलागढ़ के संदर्भ में भी यही दृष्टिकोण सर्वाधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

नौलागढ़ : उपेक्षित किंतु संभावनाओं से परिपूर्ण पुरातात्विक स्थल

बेगूसराय जिले का नौलागढ़ स्थानीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थल माना जाता है। विभिन्न क्षेत्रीय सर्वेक्षणों तथा बिहार राज्य पुरातत्व निदेशालय के अभिलेखों में इस क्षेत्र से प्राचीन ईंटों, मिट्टी के पात्रों तथा संरचनात्मक अवशेषों का उल्लेख मिलता है। यद्यपि यहाँ अभी तक बड़े स्तर पर वैज्ञानिक उत्खनन नहीं हुआ है, फिर भी उपलब्ध पुरातात्विक संकेत यह दर्शाते हैं कि यह क्षेत्र किसी प्राचीन बसावट अथवा संरक्षित बस्ती का हिस्सा रहा होगा।

Dilip K. Chakrabarti का मत है कि किसी स्थल की ऐतिहासिक महत्ता का निर्धारण केवल उत्खनन से प्राप्त सामग्री पर निर्भर नहीं करता, बल्कि स्थलाकृति, नदी तंत्र, सांस्कृतिक भू-दृश्य तथा स्थानीय परम्पराओं का भी समान महत्व होता है। इस दृष्टि से नौलागढ़ का अध्ययन केवल उपलब्ध अवशेषों तक सीमित न रहकर उसके भौगोलिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ में भी किया जाना चाहिए।

नौलागढ़ की वर्तमान स्थिति यह दर्शाती है कि पर्याप्त वैज्ञानिक संरक्षण के अभाव में ऐसे स्थानीय पुरातात्विक स्थल धीरे-धीरे प्राकृतिक क्षरण तथा मानवीय हस्तक्षेप का शिकार हो रहे हैं। यदि इस क्षेत्र का व्यवस्थित सर्वेक्षण, जीआईएस मानचित्रण तथा सीमित परीक्षण उत्खनन (Trial Excavation) किया जाए, तो उत्तर बिहार के प्रारम्भिक ऐतिहासिक विकास के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हो सकती है।

कावर (काबर) झील क्षेत्र और सांस्कृतिक परिदृश्य

कावर झील को सामान्यतः एक आर्द्रभूमि (Wetland) तथा पक्षी अभयारण्य के रूप में जाना जाता है, किन्तु इसका महत्व केवल पारिस्थितिक नहीं है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह क्षेत्र मानव बसावट, मत्स्य-आधारित अर्थव्यवस्था, धार्मिक गतिविधियों तथा नदी-आधारित सांस्कृतिक जीवन का भी महत्वपूर्ण केंद्र रहा है।

सांस्कृतिक भू-दृश्य (Cultural Landscape) की अवधारणा के अनुसार किसी पुरातात्विक स्थल का अध्ययन उसके प्राकृतिक परिवेश से पृथक नहीं किया जा सकता। इस दृष्टिकोण से कावर झील और उसके आसपास स्थित पुरातात्विक अवशेष एक-दूसरे के पूरक हैं। झील के निकट स्थित जयमंगलागढ़ इसका प्रमुख उदाहरण है, जहाँ प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत एक साथ विद्यमान है।

UNESCO की सांस्कृतिक परिदृश्य संबंधी अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत के संयुक्त संरक्षण से किसी क्षेत्र की ऐतिहासिक पहचान अधिक प्रभावी रूप से संरक्षित की जा सकती है। अतः कावर झील और उसके आसपास के पुरातात्विक स्थलों के संरक्षण को समेकित (Integrated Heritage Conservation) दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए।

काशी प्रसाद जायसवाल पुरातात्विक संग्रहालय का योगदान

बेगूसराय स्थित काशी प्रसाद जायसवाल पुरातात्विक संग्रहालय जिले की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संग्रहालय में जिले के विभिन्न भागों से प्राप्त प्राचीन मूर्तियाँ, सिक्के, मृदभाण्ड, अभिलेख तथा अन्य पुरावशेष संरक्षित हैं। इन सामग्रियों के माध्यम से स्थानीय इतिहास के अनेक ऐसे आयाम सामने आते हैं जो क्षेत्रीय पुरातात्विक स्थलों की ऐतिहासिकता को समझने में सहायक हैं।

क्षेत्रीय संग्रहालय केवल वस्तुओं के प्रदर्शन का स्थान नहीं होते, बल्कि वे स्थानीय इतिहास के दस्तावेजीकरण, शोध, जन-जागरूकता तथा विरासत शिक्षा के महत्वपूर्ण केंद्र भी होते हैं। यदि संग्रहालय के संग्रह का डिजिटलीकरण, वैज्ञानिक सूचीकरण तथा शोधार्थियों के लिए सुलभ अभिलेखीकरण किया जाए, तो बेगूसराय की पुरातात्विक विरासत पर भविष्य के अनुसंधानों को नई दिशा मिल सकती है।

समग्रतः उपलब्ध साक्ष्य यह संकेत देते हैं कि बेगूसराय के पुरातात्विक स्थल उत्तर बिहार के सांस्कृतिक इतिहास के महत्वपूर्ण अंग हैं। यद्यपि इन स्थलों पर व्यापक वैज्ञानिक उत्खनन अभी शेष है, फिर भी उपलब्ध पुरावशेष, स्थानीय

परम्पराएँ तथा प्रकाशित अध्ययन इस क्षेत्र की ऐतिहासिक प्राचीनता और सांस्कृतिक समृद्धि की पुष्टि करते हैं। इसलिए इन स्थलों का संरक्षण केवल स्थानीय आवश्यकता नहीं, बल्कि बिहार की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का भी महत्वपूर्ण दायित्व है।

बेगूसराय के पुरातात्विक स्थलों का सांस्कृतिक महत्व एवं विरासत संरक्षण की चुनौतियाँ

बेगूसराय के प्रमुख पुरातात्विक स्थल केवल ऐतिहासिक अवशेष नहीं हैं, बल्कि वे इस क्षेत्र की सांस्कृतिक स्मृति (Cultural Memory), धार्मिक परम्पराओं तथा सामाजिक पहचान के महत्वपूर्ण प्रतीक हैं। इन स्थलों में निहित पुरावशेष, मूर्तिकला, स्थापत्य अवशेष तथा स्थानीय लोक-परम्पराएँ उत्तर बिहार के दीर्घकालीन सांस्कृतिक विकास की निरंतरता को अभिव्यक्त करती हैं। आधुनिक विरासत अध्ययन (Heritage Studies) के अनुसार किसी भी पुरातात्विक स्थल का महत्त्व केवल उसकी प्राचीनता से निर्धारित नहीं होता, बल्कि वह स्थानीय समाज, सांस्कृतिक पहचान और ऐतिहासिक चेतना से किस प्रकार जुड़ा है, यह भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है (Smith, 2006)।

सांस्कृतिक पहचान और स्थानीय इतिहास

बेगूसराय के पुरातात्विक स्थल स्थानीय समाज की ऐतिहासिक स्मृति को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जयमंगलागढ़ जैसे स्थल आज भी धार्मिक आस्था के प्रमुख केंद्र हैं, जहाँ प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि इन स्थलों का महत्व केवल अतीत तक सीमित नहीं है, बल्कि वे वर्तमान सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का भी अभिन्न अंग हैं।

इतिहासकार **Radha Krishna Choudhary** का मत था कि उत्तर बिहार के अनेक स्थानीय स्थल क्षेत्रीय इतिहास को समझने की दृष्टि से उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने कि राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध पुरातात्विक केंद्र। इसी प्रकार **Dilip K. Chakrabarti** ने क्षेत्रीय पुरातत्व (Regional Archaeology) की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्ट किया कि छोटे पुरातात्विक स्थलों का अध्ययन किसी क्षेत्र के ऐतिहासिक विकास को समझने के लिए अनिवार्य है। इस दृष्टि से बेगूसराय के स्थानीय पुरातात्विक स्थल उत्तर बिहार के सांस्कृतिक इतिहास की महत्वपूर्ण कड़ी हैं।

सांस्कृतिक पर्यटन की संभावनाएँ

यदि वैज्ञानिक संरक्षण एवं समुचित प्रबंधन सुनिश्चित किया जाए, तो बेगूसराय के प्रमुख पुरातात्विक स्थल सांस्कृतिक पर्यटन (Cultural Tourism) के महत्वपूर्ण केंद्र बन सकते हैं। वर्तमान में अधिकांश पर्यटक केवल धार्मिक उद्देश्य से जयमंगलागढ़ आते हैं, जबकि आसपास के पुरातात्विक एवं प्राकृतिक स्थलों–विशेषकर कावर झील–को एकीकृत विरासत परिपथ (Integrated Heritage Circuit) के रूप में विकसित किया जा सकता है।

UNESCO (2023) का मत है कि विरासत संरक्षण और स्थानीय आर्थिक विकास परस्पर विरोधी नहीं हैं; उचित प्रबंधन के माध्यम से सांस्कृतिक विरासत स्थानीय समुदाय के लिए रोजगार, पर्यटन और सांस्कृतिक शिक्षा का स्थायी स्रोत बन सकती है। अतः बेगूसराय में भी धार्मिक पर्यटन को सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक पर्यटन से जोड़ने की आवश्यकता है।

विरासत संरक्षण की प्रमुख चुनौतियाँ

उपलब्ध साहित्य एवं सरकारी दस्तावेजों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि बेगूसराय के पुरातात्विक स्थलों के संरक्षण के समक्ष अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं।

वैज्ञानिक संरक्षण का अभाव

जिले के अधिकांश स्थानीय पुरातात्विक स्थलों पर व्यवस्थित उत्खनन, अभिलेखीकरण (Documentation) तथा संरक्षण कार्य सीमित स्तर पर हुए हैं। परिणामस्वरूप अनेक पुरावशेष समय के साथ नष्ट हो रहे हैं अथवा स्थानीय स्तर पर बिखरे हुए हैं। **Archaeological Survey of India** द्वारा संरक्षित राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों की तुलना में ऐसे क्षेत्रीय स्थलों को अपेक्षाकृत कम संस्थागत संरक्षण प्राप्त हुआ है।

शहरीकरण एवं अतिक्रमण

तेजी से बढ़ते शहरीकरण, सड़क निर्माण, कृषि विस्तार तथा अनियोजित निर्माण गतिविधियों के कारण अनेक स्थानीय पुरातात्विक स्थल प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हो रहे हैं। विरासत संरक्षण साहित्य में इसे 'Development Pressure' कहा गया है, जो विकास और संरक्षण के बीच संतुलन की आवश्यकता को रेखांकित करता है (ICOMOS,

2017).

जन-जागरूकता की कमी

स्थानीय समुदाय के अनेक लोगों को इन स्थलों के ऐतिहासिक महत्व की पर्याप्त जानकारी नहीं है। फलस्वरूप प्राचीन मूर्तियों, ईंटों अथवा अन्य पुरावशेषों का संरक्षण कई बार प्राथमिकता नहीं बन पाता। **Laurajane Smith (2006)** के अनुसार किसी भी विरासत संरक्षण कार्यक्रम की सफलता स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी पर निर्भर करती है। अतः संरक्षण को केवल सरकारी दायित्व न मानकर सामुदायिक दायित्व के रूप में भी विकसित करना आवश्यक है।

पर्यावरणीय एवं प्राकृतिक क्षरण

बेगूसराय के अनेक पुरातात्विक स्थल नदी, आर्द्रभूमि अथवा खुले भूभाग के निकट स्थित हैं। वर्षा, बाढ़, मृदा अपरदन, वनस्पति वृद्धि तथा जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से इन स्थलों के भौतिक अवशेष निरंतर क्षतिग्रस्त हो रहे हैं। विशेष रूप से कावर झील के आसपास स्थित सांस्कृतिक स्थलों के संरक्षण के लिए पर्यावरणीय प्रबंधन और विरासत संरक्षण के समन्वित दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

शोध एवं अभिलेखीकरण का अभाव

बेगूसराय के अधिकांश स्थानीय पुरातात्विक स्थलों पर विस्तृत शोध, GIS आधारित मानचित्रण, त्रि-आयामी (3D) प्रलेखन तथा डिजिटल अभिलेखीकरण अभी भी सीमित है। परिणामस्वरूप अनेक स्थलों की ऐतिहासिक जानकारी केवल स्थानीय परम्पराओं अथवा बिखरे हुए संदर्भों तक सीमित रह जाती है। आधुनिक विरासत संरक्षण में डिजिटल दस्तावेजीकरण को संरक्षण का महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है।

संरक्षण के लिए नीतिगत सुझाव

उपलब्ध साहित्य तथा अंतरराष्ट्रीय विरासत संरक्षण सिद्धांतों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं–

- बेगूसराय के सभी प्रमुख पुरातात्विक स्थलों का वैज्ञानिक सर्वेक्षण एवं अद्यतन अभिलेखीकरण किया जाए।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण तथा बिहार राज्य पुरातत्व निदेशालय के सहयोग से चयनित स्थलों पर सीमित परीक्षण उत्खनन (Trial Excavation) एवं संरक्षण कार्य प्रारम्भ किए जाएँ।
- जयमंगलागढ़, कावर झील तथा काशी प्रसाद जायसवाल पुरातात्विक संग्रहालय को जोड़ते हुए एक **Integrated Heritage Circuit** विकसित किया जाए।
- स्थानीय विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं के सहयोग से विरासत जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
- संग्रहालयों एवं पुरावशेषों का डिजिटल अभिलेखीकरण तथा वर्चुअल प्रदर्शनी (Virtual Exhibition) विकसित की जाए।
- सांस्कृतिक पर्यटन की योजनाओं में स्थानीय समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित की जाए, जिससे संरक्षण और स्थानीय आर्थिक विकास दोनों को प्रोत्साहन मिल सके।

समग्रतः यह कहा जा सकता है कि बेगूसराय की पुरातात्विक विरासत केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की सांस्कृतिक पूँजी भी है। यदि संरक्षण, अनुसंधान और सामुदायिक सहभागिता को एकीकृत दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ाया जाए, तो यह क्षेत्र न केवल बिहार के क्षेत्रीय इतिहास के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान देगा, बल्कि सांस्कृतिक पर्यटन एवं स्थानीय विकास की नई संभावनाएँ भी उत्पन्न करेगा।

चर्चा (Discussion)

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बेगूसराय की पुरातात्विक विरासत का महत्व केवल कुछ धार्मिक स्थलों या स्थानीय ऐतिहासिक परम्पराओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उत्तर बिहार के सांस्कृतिक विकास, क्षेत्रीय इतिहास तथा पुरातात्विक भू-दृश्य (Archaeological Landscape) को समझने का एक महत्त्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करती है। उपलब्ध साहित्य का

तुलनात्मक अध्ययन यह संकेत देता है कि यद्यपि बेगूसराय पर स्वतंत्र एवं विस्तृत पुरातात्विक अनुसंधान अपेक्षाकृत कम हुए हैं, फिर भी विभिन्न सर्वेक्षणों, संग्रहालयों, पुरावशेषों तथा क्षेत्रीय इतिहास से प्राप्त साक्ष्य इस जिले की ऐतिहासिक प्राचीनता को पुष्ट करते हैं।

भारतीय पुरातत्व के प्रारम्भिक अध्ययनों में **Alexander Cunningham** ने भारत के अनेक प्राचीन स्थलों की पहचान एवं अभिलेखीकरण का कार्य किया। उनका दृष्टिकोण मुख्यतः स्थलों की पहचान, प्राचीन यात्रावृत्तों के मिलान तथा भौतिक अवशेषों के आधार पर ऐतिहासिक पुनर्निर्माण पर आधारित था। यह कार्य भारतीय पुरातत्व की आधारशिला सिद्ध हुआ, किंतु उस समय अनेक छोटे क्षेत्रीय स्थलों पर विस्तृत अध्ययन संभव नहीं हो सका। बेगूसराय भी उन क्षेत्रों में सम्मिलित था जहाँ व्यवस्थित उत्खनन और वैज्ञानिक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित रहे।

इसके विपरीत आधुनिक पुरातत्वविद **D. K. Chakrabarti** ने क्षेत्रीय पुरातत्व (Regional Archaeology) की अवधारणा को विकसित करते हुए यह प्रतिपादित किया कि किसी क्षेत्र का इतिहास केवल बड़े नगरों या प्रसिद्ध स्मारकों से नहीं समझा जा सकता। छोटे पुरातात्विक स्थल, नदी तंत्र, बसावट के पैटर्न तथा स्थानीय सांस्कृतिक परम्पराएँ भी ऐतिहासिक पुनर्निर्माण में समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो बेगूसराय का अध्ययन अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि यहाँ के अधिकांश पुरातात्विक स्थल गंगा नदी तथा कावर (काबर) झील जैसे प्राकृतिक संसाधनों से जुड़े हुए हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि इस क्षेत्र का विकास केवल धार्मिक कारणों से नहीं, बल्कि भौगोलिक एवं आर्थिक परिस्थितियों से भी प्रभावित रहा होगा।

बिहार के इतिहासकार **A. S. Altekar** तथा **B. P. Sinha** ने प्राचीन बिहार के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास का अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट किया कि उत्तर बिहार के अनेक क्षेत्र प्राचीन काल से धार्मिक, व्यापारिक तथा सांस्कृतिक संपर्क के सक्रिय केंद्र थे। यद्यपि उनका मुख्य ध्यान वैशाली, पाटलिपुत्र, नालंदा एवं मगध क्षेत्र पर रहा, तथापि उनके अध्ययन यह संकेत देते हैं कि इन प्रमुख केंद्रों के आसपास स्थित क्षेत्रीय स्थलों का भी ऐतिहासिक महत्व कम नहीं था। बेगूसराय के संदर्भ में यह दृष्टिकोण इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ प्राप्त पुरावशेष उत्तर बिहार के व्यापक सांस्कृतिक नेटवर्क की ओर संकेत करते हैं।

क्षेत्रीय इतिहास के संदर्भ में **Radha Krishna Choudhary** का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने बेगूसराय क्षेत्र से प्राप्त पुरावशेषों के संरक्षण, दस्तावेजीकरण तथा स्थानीय इतिहास लेखन की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया। उनके प्रयासों से यह स्थापित हुआ कि बेगूसराय का इतिहास केवल आधुनिक प्रशासनिक इकाई का इतिहास नहीं है, बल्कि इसकी ऐतिहासिक जड़ें प्रारम्भिक एवं मध्यकालीन सांस्कृतिक परम्पराओं तक जाती हैं। उनके द्वारा स्थानीय संग्रहालयों एवं पुरावशेषों के संरक्षण पर दिया गया बल आज भी प्रासंगिक प्रतीत होता है।

विरासत संरक्षण के क्षेत्र में आधुनिक दृष्टिकोण पारंपरिक संरक्षण पद्धतियों से भिन्न है। **Laurajane Smith (2006)** का तर्क है कि विरासत (Heritage) केवल स्मारकों या पुरावशेषों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह समाज द्वारा निर्मित सांस्कृतिक अर्थों (Cultural Meanings) की सतत प्रक्रिया है। इसी प्रकार **UNESCO** तथा **ICOMOS** यह प्रतिपादित करते हैं कि किसी भी विरासत स्थल के संरक्षण में स्थानीय समुदाय की सहभागिता, सांस्कृतिक पर्यटन, शिक्षा तथा सतत विकास को समान महत्व दिया जाना चाहिए। इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो बेगूसराय के पुरातात्विक स्थलों का संरक्षण केवल संरचनात्मक मरम्मत तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि उन्हें स्थानीय सांस्कृतिक जीवन, शिक्षा तथा पर्यटन विकास से भी जोड़ा जाना चाहिए।

अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि बेगूसराय के पुरातात्विक स्थलों के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती शोध एवं दस्तावेजीकरण का अभाव है। नालंदा, वैशाली तथा विक्रमशिला जैसे स्थलों पर जहाँ विस्तृत उत्खनन, अभिलेखीकरण एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर का संरक्षण कार्य हुआ है, वहीं बेगूसराय के अधिकांश स्थलों पर अभी भी व्यवस्थित वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है। इस कारण अनेक स्थलों का काल-निर्धारण, सांस्कृतिक अनुक्रम (Cultural Sequence) तथा ऐतिहासिक भूमिका अभी भी पूर्णतः स्पष्ट नहीं हो सकी है। यह स्थिति भविष्य के अनुसंधानों के लिए व्यापक संभावनाएँ प्रस्तुत करती है।

तुलनात्मक विश्लेषण से यह भी स्पष्ट होता है कि बेगूसराय की विरासत संरक्षण संबंधी समस्याएँ केवल स्थानीय नहीं हैं, बल्कि भारत के अनेक क्षेत्रीय पुरातात्विक स्थलों की साझा चुनौती हैं। शहरीकरण, अतिक्रमण, प्राकृतिक क्षरण, सीमित

वित्तीय संसाधन, प्रशिक्षित संरक्षण विशेषज्ञों की कमी तथा स्थानीय समुदाय की सीमित भागीदारी जैसी समस्याएँ राष्ट्रीय स्तर पर भी देखी जाती हैं। इसलिए बेगूसराय के संरक्षण की रणनीति को राष्ट्रीय विरासत संरक्षण नीतियों तथा अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप विकसित किया जाना चाहिए।

समग्रतः प्रस्तुत अध्ययन यह स्थापित करता है कि बेगूसराय के प्रमुख पुरातात्विक स्थल उत्तर बिहार की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत की महत्वपूर्ण कड़ी हैं। इनका महत्व केवल धार्मिक या स्थानीय दृष्टि से नहीं, बल्कि क्षेत्रीय इतिहास, सांस्कृतिक भू-दृश्य, कला, स्थापत्य तथा विरासत अध्ययन के व्यापक संदर्भ में भी है। उपलब्ध साहित्य यह संकेत देता है कि यदि इन स्थलों पर वैज्ञानिक सर्वेक्षण, व्यवस्थित दस्तावेजीकरण, सीमित पुरातात्विक उत्खनन तथा समुदाय-आधारित संरक्षण कार्यक्रम विकसित किए जाएँ, तो बेगूसराय भारतीय पुरातत्व एवं सांस्कृतिक विरासत अध्ययन के मानचित्र पर अधिक सशक्त रूप से स्थापित हो सकता है। यही इस अध्ययन का प्रमुख विश्लेषणात्मक निष्कर्ष है।

निष्कर्ष एवं नीतिगत सुझाव (Conclusion and Policy Implications)

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बेगूसराय जिला केवल आधुनिक सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। उपलब्ध पुरातात्विक साक्ष्य, क्षेत्रीय इतिहास, संग्रहालयों में संरक्षित पुरावशेष तथा प्रकाशित शोध यह संकेत देते हैं कि यह क्षेत्र प्राचीन एवं प्रारम्भिक मध्यकालीन सांस्कृतिक गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। जयमंगलागढ़, नौलागढ़, कावर (काबर) झील क्षेत्र तथा अन्य स्थानीय पुरातात्विक अवशेष उत्तर बिहार के ऐतिहासिक विकास, धार्मिक परम्पराओं, कला एवं स्थापत्य तथा सांस्कृतिक निरंतरता के महत्वपूर्ण प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। यद्यपि इन स्थलों पर नालंदा, वैशाली अथवा विक्रमशिला जैसी व्यापक पुरातात्विक खुदाइयाँ नहीं हुई हैं, फिर भी उपलब्ध साक्ष्य इनके क्षेत्रीय ऐतिहासिक महत्व को स्थापित करने के लिए पर्याप्त आधार प्रदान करते हैं।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि बेगूसराय के अधिकांश पुरातात्विक स्थलों पर अब तक सीमित वैज्ञानिक अनुसंधान हुआ है। उपलब्ध साहित्य मुख्यतः क्षेत्रीय इतिहास, स्थानीय परम्पराओं तथा आंशिक पुरातात्विक सर्वेक्षणों पर आधारित है। परिणामस्वरूप अनेक स्थलों का काल-निर्धारण, सांस्कृतिक अनुक्रम तथा ऐतिहासिक भूमिका अभी भी पूर्णतः स्पष्ट नहीं हो सकी है। यह स्थिति इस क्षेत्र में भविष्य के विस्तृत पुरातात्विक अनुसंधान की आवश्यकता को रेखांकित करती है। विशेष रूप से GIS आधारित सर्वेक्षण, सीमित परीक्षण उत्खनन (Trial Excavation), डिजिटल अभिलेखीकरण तथा अंतःविषयक (Interdisciplinary) अनुसंधान बेगूसराय की सांस्कृतिक विरासत को अधिक वैज्ञानिक ढंग से समझने में सहायक हो सकते हैं।

उपलब्ध साहित्य के तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि बेगूसराय की ऐतिहासिक विरासत को लंबे समय तक बिहार के प्रसिद्ध पुरातात्विक स्थलों की तुलना में अपेक्षाकृत कम महत्व मिला। **Alexander Cunningham**, **A. S. Altekar**, **B. P. Sinha**, **D. K. Chakrabarti** तथा **Radha Krishna Choudhary** जैसे विद्वानों के कार्य यह संकेत देते हैं कि किसी भी क्षेत्र का इतिहास केवल बड़े स्मारकों से नहीं, बल्कि स्थानीय पुरातात्विक स्थलों, सांस्कृतिक भू-दृश्य तथा क्षेत्रीय परम्पराओं के अध्ययन से भी निर्मित होता है। प्रस्तुत अध्ययन इसी दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुए यह प्रतिपादित करता है कि बेगूसराय के पुरातात्विक स्थलों का संरक्षण उत्तर बिहार के क्षेत्रीय इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है।

विरासत संरक्षण के संदर्भ में अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि वर्तमान समय में बेगूसराय के अधिकांश पुरातात्विक स्थल शहरीकरण, अतिक्रमण, प्राकृतिक क्षरण, सीमित वित्तीय संसाधनों, अपर्याप्त वैज्ञानिक संरक्षण तथा जन-जागरूकता की कमी जैसी समस्याओं का सामना कर रहे हैं। इन चुनौतियों का समाधान केवल स्मारकों की भौतिक मरम्मत तक सीमित नहीं होना चाहिए। आधुनिक विरासत संरक्षण की अवधारणा के अनुसार स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी, डिजिटल प्रलेखन, सांस्कृतिक शिक्षा, विरासत पर्यटन तथा सतत प्रबंधन (Sustainable Heritage Management) को संरक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए। UNESCO तथा ICOMOS द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत भी इसी समग्र दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं।

नीतिगत दृष्टि से यह आवश्यक है कि बेगूसराय जिले के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों का वैज्ञानिक सर्वेक्षण एवं अद्यतन

अभिलेखीकरण किया जाए। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण तथा बिहार राज्य पुरातत्व निदेशालय के सहयोग से चयनित स्थलों पर चरणबद्ध पुरातात्विक अन्वेषण एवं संरक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाएँ। काशी प्रसाद जायसवाल पुरातात्विक संग्रहालय को क्षेत्रीय शोध एवं अभिलेखीकरण केंद्र के रूप में विकसित किया जा सकता है, जहाँ स्थानीय पुरावशेषों का डिजिटलीकरण, वैज्ञानिक सूचीकरण तथा शोधार्थियों के लिए मुक्त अभिगम (Research Access) उपलब्ध कराया जाए। साथ ही, जयमंगलागढ़, कावर झील तथा अन्य ऐतिहासिक स्थलों को जोड़कर एक **समेकित विरासत एवं सांस्कृतिक पर्यटन परिपथ (Integrated Heritage and Cultural Tourism Circuit)** विकसित किया जा सकता है, जिससे संरक्षण और स्थानीय आर्थिक विकास दोनों को प्रोत्साहन मिलेगा।

चूँकि यह अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, इसलिए इसकी कुछ सीमाएँ भी हैं। अध्ययन में प्रत्यक्ष क्षेत्रीय सर्वेक्षण, पुरातात्विक उत्खनन अथवा वैज्ञानिक परीक्षणों का उपयोग नहीं किया गया है। भविष्य में प्राथमिक (Primary) आँकड़ों पर आधारित अनुसंधान, पुरातात्विक मानचित्रण, स्थानीय समुदायों की सहभागिता, सांस्कृतिक पर्यटन की संभावनाओं तथा बेगूसराय के विशिष्ट स्थलों के विस्तृत अध्ययन पर कार्य किया जा सकता है। इससे न केवल जिले की ऐतिहासिक समझ अधिक समृद्ध होगी, बल्कि उत्तर बिहार के क्षेत्रीय इतिहास के पुनर्निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा।

अंततः यह कहा जा सकता है कि बेगूसराय की पुरातात्विक विरासत केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान सांस्कृतिक पहचान और भविष्य की सामाजिक-सांस्कृतिक पूँजी है। इन स्थलों का संरक्षण केवल इतिहास या पुरातत्व का विषय नहीं, बल्कि सांस्कृतिक उत्तरदायित्व, स्थानीय विकास और राष्ट्रीय विरासत संरक्षण का भी महत्वपूर्ण प्रश्न है। यदि वैज्ञानिक अनुसंधान, प्रभावी संरक्षण नीति और स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी को एकीकृत किया जाए, तो बेगूसराय न केवल बिहार के क्षेत्रीय इतिहास में, बल्कि भारतीय पुरातत्व एवं सांस्कृतिक विरासत अध्ययन में भी अधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकता है।

संदर्भ सूची (References)

1. Altekar, A. S. (1954). *The Rāṣṭrakūṭas and Their Times*. Oriental Book Agency.
2. Archaeological Survey of India. (Various Years). *Annual Report of the Archaeological Survey of India*. Government of India.
3. Archaeological Survey of India. (Various Years). *Indian Archaeology - A Review*. New Delhi: Government of India.
4. Chakrabarti, D. K. (2006). *The Archaeology of Ancient Indian Cities* (2nd ed.). Oxford University Press.
5. Chakrabarti, D. K. (2013). *Archaeological Geography of the Ganga Plain: The Lower and the Middle Ganga*. Permanent Black.
6. Choudhary, R. K. (1970). *History of Bihar*. Motilal Banarsidass.
7. Cunningham, A. (1871-1887). *Archaeological Survey of India Reports* (Vols. I-XXIII). Government of India.
8. Government of Bihar. (Various Years). *Bihar District Gazetteers: Begusarai*. Patna: Revenue Department.
9. Government of Bihar. (Various Years). *Annual Report of the Directorate of Archaeology and Museums*. Department of Art, Culture and Youth, Government of Bihar.
10. ICOMOS. (1964). *The Venice Charter: International Charter for the Conservation and Restoration of Monuments and Sites*.
11. ICOMOS. (2017). *Principles for the Conservation of Heritage Sites in India*. New Delhi.
12. Kumari, L. (2020). *Archaeological Gazetteer of Begusarai District*. Kashi Prasad Jayaswal Research Institute, Patna.
13. Marshall, J. (1923). *Conservation Manual*. Government of India Press.
14. Michell, G. (1988). *The Penguin Guide to the Monuments of India* (Vol. 1). Penguin Books.
15. Ray, H. P. (2019). *Negotiating Cultural Heritage: Indian Archaeology and the Public*. Routledge.
16. Sinha, B. P. (1969). *Comprehensive History of Bihar* (Vol. I). K. P. Jayaswal Research Institute.
17. Smith, L. (2006). *Uses of Heritage*. Routledge.
18. Thapar, B. K. (1985). *Recent Archaeological Discoveries in India*. Archaeological Survey of India.
19. UNESCO. (1972). *Convention Concerning the Protection of the World Cultural and Natural Heritage*. Paris.
20. UNESCO. (2023). *Operational Guidelines for the Implementation of the World Heritage Convention*.
21. Kashi Prasad Jayaswal Archaeological Museum. (n.d.). *Museum records and collection catalogue*.

Ganesh Dutt College, Begusarai.

22. Bihar Museum Directorate. (Various Years). *Museum Development and Heritage Conservation Reports*. Government of Bihar.
23. Begusarai District Administration. (Various Years). *District Statistical Handbook and Cultural Profile*. Government of Bihar.
24. Jha, D. N. (1999). *Ancient India: An Introductory Outline*. Manohar Publishers.
25. Singh, U. (2008). *A History of Ancient and Early Medieval India: From the Stone Age to the 12th Century*. Pearson Education.
26. Possehl, G. L. (2002). *The Indus Civilization: A Contemporary Perspective*. AltaMira Press.